38

सहायता चाहिए

(8:26-28)

जिसे भी मसीही जीवन जीने में सहायता चाहिए, वह अपना हाथ खड़ा करे। अपने मन में मैं पूरे संसार में हज़ारों हाथ खड़े देखने की कल्पना कर सकता हूं। मैं आप में कइयों को *दोनों* हाथ खड़े करने पर विचार करता हूं।

रोमियों 8 को "अनुग्रह और महिमा के बीच कराहना है" कहा गया है।[1] यानी परमेश्वर की संतान बनने और एक दिन प्रगट होने वाली महिमा के बीच, प्रतिदिन यीशु के लिए जीने की कोशिश करने के साथ जुड़ा कराहना है। रोमियों की पुस्तक के अपने अध्ययन में, पहले मैंने दो कराहनों अर्थात सृष्टि का कराहना (रोमियों 8:22) "विनाश के दासत्व से छुटकारा पाने" के लिए (आयत 21) और शारीरिक पुनरुत्थान की प्रतीक्षा करने के रूप में हम मसीही लोगों का कराहना (आयत 23)। इस पाठ के लिए वचन पाठ हमारी प्रार्थनाओं के सज़्बन्ध में कराहना का तीसरा हवाला है। "ऐसी आहें भर भर कर, जो ज़्यान से बाहर हैं" (आयत 26)। हम में से अधिकतर लोग आत्मिक कराहना से परिचित हैं। हमने राहत की आवश्यकता अर्थात जो आत्मिक तौर पर हमें होना चाहिए और जो हमें करना चाहिए उसमें *सहायता* की आवश्यकता महसूस की है। इस पाठ का वचन पाठ यह घोषणा करता है कि परमेश्वर की संतान के लिए सहायता उपलज़्ध है।

इस पाठ में ज़ोर इस बात पर है कि परमेश्वर अपने आत्मा के द्वारा हमारी सहायता कैसे करता है। रोमियों 8 में अपने अध्ययन में हमने ऐसे कई ढंग देखे हैं, जिनके द्वारा आत्मा हमारी सहायता करता है।[2] 26 से 28 आयतें उस विषय को चरम पर पहुंचाती हैं, जो अपने आत्मा के द्वारा परमेश्वर मसीही व्यज़्ति के लिए करता है। परमेश्वर जो कुछ अपने बच्चों के जीवनों में कर रहा है हम "पर्दे के पीछे" की एक झलक देखेंगे।

ज़बर्दस्त सहायता (8:26क)

हम पढ़ते हैं, "इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है"[3] (आयत 26क)। "इसी रीति से" और "भी" पहले कही गई किसी बात को जोड़ते हैं। इन शज़्दों का संकेत आत्मा के विषय में कही गई पहली बातों के लिए हो सकता है। उदाहरण के लिए आयत 26 के पहले भाग का अर्थ हो सकता है कि "इसी प्रकार आत्मा हमारी आत्माओं के साथ गवाही देता है [आयत 16] वह हमारी निर्बलता में सहायता भी करता है।" सज़्भवतया यह आशा पर अभी-अभी पूरी हुई चर्चा की बात है। और एक तरह से इसका अर्थ, "जैसे आशा से धीरज मिलता है [आयतें 24, 25] वैसे ही आत्मा हमारी निर्बलता में सहायता करता है।"

इस हवाले की संक्षिप्त बात ये रोमांचकारी उतनी महत्वपूर्ण नहीं है जितनी यह रोमांचकारी सच्चाई कि "आत्मा ... हमारी निर्बलता में सहायता करता है"! कैसी निर्बलता? *किसी भी* प्रकार की निर्बलता चाहे वह शारीरिक, भावनात्मक हो या आत्मिक डग्लस जे. मू ने सुझाव दिया कि

''निर्बलता हमारी मानवीय स्थिति की सीमाओं को कहा गया है।''[4] हम में से कइयों को अपने आप को ''कमज़ोर'' मानने में हिचक होती है, परन्तु यदि हम ईमानदार हैं, तो हमें अपने अन्दर की कमज़ोरियों को मानना ही पड़ेगा। जो निरन्तर, पज़्की और कई बार हम पर काबू पाने वाली होती हैं। ज़्या यह जानना अद्‌भुत नहीं है कि हमें ईश्वरीय सहायता मिल सकती है? ''आत्मा ... हमारी दुर्बलता में सहायता करता है।''

अनुवादित शज़्द ''सहायता करता है'' का यूनानी शज़्द *sunantilambano* जटिल, परन्तु निर्देशात्मक है। यह तीन यूनानी शज़्दों *sun* (''के साथ''), *anti* (''विरुद्ध, के उलटी दिशा में''), और *lambano* (''लेना, पाना'') को मिलाता है। यूनानी व्याकरण पर अपनी पुस्तक में ऐ. टी. रॉबर्टसन ने लिखा है कि ''पवित्र आत्मा हमारे साथ [sun] हमारी निर्बलता को पकड़ लेता [*lambano*] और हमारे सामने [*anti*] बोझ के अपने भाग को उठा लेता है जैसे दो जन एक लट्ठे को दोनों और से उठाकर ले जा रहे थे।[5] हमारा परिवार कई बार शिज़्ट हुआ है और मुझे भारी फर्नीचर ले जाना पड़ा है इसलिए मेरे ध्यान में आने वाली तस्वीर बहुत बड़ा बज़्सा एक सिरे से उठाकर खड़े होकर समझ न आने की है कि मैं ज़्या करूंगा। मैं इसे किसी प्रकार उठा नहीं सकता, ले जाना तो दूर की बात है। फिर एक हट्टा कट्टा बलिष्ट मित्र वहां आता है। वह मुझ पर हंसता है बज़्से को दूसरे सिरे से हाथ डालकर उठा लेता है। वैसे ही पवित्र आत्मा मेरे बोझ उठाने में और चुनौतियों का सामना करने में मेरी सहायता करता है (उज़्मीद है कि यह समझाने के लिए कि आत्मा बोझ की ''भारी साइड'' ले लेता है समझना कठिन नहीं है।)

मुझे कुरिन्थियों को कही पौलुस की बात याद आती है जिसमें उसने अपनी शारीरिक निर्बलता की बात की जो उसे परेशान करती थी।

> और उस [परमेश्वर] ने मुझ से कहा, मेरा अनुग्रह तेरे लिए बहुत है; ज़्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है; इसलिए मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा, कि मसीह की सामर्थ मुझ पर छाया करती रहे। इस कारण मैं मसीह के लिए निर्बलताओं, ... में प्रसन्न हूं; ज़्योंकि जब मैं निर्बल होता हूं, तभी बलवन्त होता हूं (कुरिन्थियों 12:9, 10)।

पौलुस ने अपनी सामर्थ के बजाय परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर रहना सीख लिया था। यह एक ऐसा सबक है जो हम सब को सीखने की आवश्यकता है।

प्रार्थना भरी सहायता (8:26क, ख, 27)

आत्मा की सहायता ''ज़्या''

यह घोषणा करने के बाद कि ''आत्मा ... दुर्बलता में हमारी सहायता करता है।'' पौलुस ने इसे किसी विशेष असफलता की बात से जो हम सब पर आती है, इस सच्चाई को समझाया, ताकि हमें पता चले कि आत्मा हमारी उस विशेष निर्बलता में सहायता करता है। आपको अपनी सबसे बड़ी कमज़ोरी ज़्या लगती है? आपको अपनी किस कमज़ोरी पर जय पाने के लिए आत्मा की सहायता चाहिए? इस प्रश्न के कई उज़र दिए जा सकते हैं: विश्वास की कमज़ोरी, नैतिक

कमज़ोरी, सचमुच में हर हाल में प्रभु में भरोसा रखने की कमज़ोरी। अपने उदाहरण के लिए पौलुस द्वारा चुनी गई कमज़ोरी। हमारे *प्रार्थना* के जीवनों की कमी, की बात पर कइयों को हैरानी हो सकती है: ''ज़्योंकि हम नहीं जानते, कि प्रार्थना किस रीति से करनी चाहिए'' (आयत 26ख)। परन्तु रुककर विचार करें। प्रार्थना ज़्या है? यह परमेश्वर के साथ हमारी जीवन रेखा है। यदि हमारे प्रार्थना के जीवन वैसे हैं, जैसे होने चाहिए, तो परमेश्वर अन्य समस्याओं में जिनकी बात की गई है हमारी सहायता कर सकता है; परन्तु यदि वह जीवन रेखा खराब हो जाए तो सब कुछ खत्म है।

पौलुस ने यह कहकर कि हम नहीं जानते कि प्रार्थना *कैसे* करनी चाहिए? हमारी प्रार्थनाओं की कमज़ोरी का ज़्यान किया। KJV में ''... हमें नहीं मालूम कि हमें *ज़्या* प्रार्थना करनी चाहिए।'' ''कैसे और ज़्या'' का अनुवाद प्रश्नवाचक[7] सर्वनाम *tis* के एक रूप से लिया गया है। TIS का अनुवाद आम तौर पर ''ज़्या'' होता है, परन्तु इसका अर्थ ''इसलिए, ज़्यों, ज़्या [या] कैसे'' हो सकता है।[8] रोमियों 8:26 के सज़्बन्ध में अनुवाद ''ज़्यों'' और ''ज़्या'' में समान रूप से विभाजित हैं।

मैं इन दोनों शज़्दों को समझ सकता हूं। मुझे आमतौर पर पता नहीं होता *ज़्या* प्रार्थना करनी है। ज़्योंकि मुझे पज़्का पता नहीं है कि उस मामले में परमेश्वर की इच्छा ज़्या है, और मुझे नहीं मालूम कि अन्त में सबसे बढ़िया ज़्या होगा। जब मुझे कठिनाई आती है, तो ज़्या मुझे प्रभु से उस समस्या को दूर करने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए या उसे सहने के लिए सामर्थ पाने के लिए? जब मैं अपने किसी प्रियजन के बिस्तर के पास होता हूं और वह बड़ी तकलीफ़ में है तो ज़्या मुझे उसके लिए हमारे साथ रहने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए या जाकर प्रभु के साथ रहने के लिए? कई अवसरों पर मुझे अपना सिर हिलाकर यह मानना पड़ा है कि ''मुझे केवल यह पता है कि मैं प्रार्थना करूं, 'तेरी इच्छा पूरी हो।' ''

इसके अलावा मैं यह भी जानता हूं कि कई प्रकार से मुझे नहीं मालूम कि प्रार्थना *कैसे* करनी है। मुझे नहीं मालूम कि जिसने मेरे प्राण को बचाया और मुझे प्रतिदिन आशीष देता है, उसकी योग्य महिमा कैसे करूं। मुझे नहीं मालूम कि अपनी विनतियों में से स्वार्थ का धज़्बा कैसे हटाऊं। सृष्टि के रचने वाले और स्वामी से बात करने में मानवीय बोलचाल की अपर्याप्तता को मैं बड़े दर्द भरे ढंग से जानता हूं। अपने मन में मैंने कई बार बचकाना विनती, ''मुझे क्षमा कर दे, प्रभु, और मेरी सहायता कर। मेरी सहायता कर; मेरी सहायता कर'' ही कहा है।

ज़्योंकि *tis* का अनुवाद ''कैसे'' या ''ज़्या'' मेरे से कोई भी हो सकता है और दोनों ही हमारी प्रार्थना की कमी में सज़्मिलित हैं, इसलिए कई अनुवादों में इन दोनों में अन्तर चुनने का प्रयास नहीं किया जाता। उदाहरण के लिए, AB के अनुवाद में है ''... न तो हम यह जानते हैं कि *ज़्या* प्रार्थना करनी है और न यह कि कैसे प्रार्थना करनी चाहिए।''

आत्मा की सहायता: ''कैसे''

प्रार्थना करने के समय आत्मा किस प्रकार से हमारी निर्बलता में सहायता करता है? ''... आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए बिनती करता है'' (आयत 26ग)। ''हमारे लिए बिनती करता है'' शज़्द का अनुवाद *huperentunchano* (*huper* ["की

ओर से''[9]] के साथ *entunchano* [''विनती करना''] से किया गया है। यह यूनानी शज़्द और अंग्रेज़ी शज़्द ''intercede'' दोनों का अर्थ दूसरे की ओर से विनती करना है। रोमियों 8 में थोड़ा आगे, हम सीखेंगे कि मसीह स्वर्ग में मसीही लोगों के लिए विनती करता है (आयत 34; देखें इब्रानियों 7:25)। आयत 26 हमें बताती है कि विशेष प्रकार से आत्मा का वास हमारा मुकद्दमा लड़ता है।

कई लोग रोमियों 8:26 से उलझन में पड़ जाते हैं। वे आपज़ि करते हैं, ''परन्तु 1 तीमुथियुस 2:5 कहता है कि *मध्यस्थ* केवल एक ही है और वह यीशु है।'' परन्तु सिफ़ारिश करने वाले हमारे पास कई हो सकते हैं, वे मानवीय और ईश्वरीय दोनों है। नया नियम सिखाता है कि मनुष्यों को भी दूसरों के लिए ''सिफ़ारिशी'' प्रार्थनाएं करनी चाहिए (देखें रोमियों 15:30; 1 तीमुथियुस 2:1, 2)। इसालिए यह कहने में कोई विरोधाभास नहीं है कि यीशु और आत्मा दोनों हमारे लिए सिफ़ारिश करते हैं। यह सुझाव दिया गया है कि मसीह परमेश्वर के सिंहासन पर हमारे लिए सिफ़ारिश करता है और हमारे मन के सिंहासन पर सिफ़ारिश करता है। हमारा वचन पाठ उस पर कन्द्रित है जो *आत्मा* करता है। मुझे इस इस प्रकार कहना अच्छा लगता है: हम परमेश्वर से *यीशु के द्वारा* आत्मा *की सहायता से* प्रार्थना करते हैं।

पौलुस ने केवल इतना नहीं कहा कि आत्मा हमारे लिए सिफ़ारिश करता है। उसने कहा कि ''*आत्मा ... आहें भर भर कर, जो ज़्यान से बाहर हैं* हमारे लिए विनती करता है।'' ''जो ज़्यान से बाहर है'' का अनुवाद *alaletos* से किया गया है जो ऐसा शज़्द लेता है जिसका अर्थ ''बोलना'' (*laleo*) है और इसे नकारता है (*a*)। *Alaletos* का इस्तेमाल या तो उसके लिए हो सकता है जो ज़्यान *न* किया गया हो या उसके लिए जिसे ज़्यान *न किया जा सकता* हो।[10] ज़्या आप कभी इतने प्रसन्न हुए हैं कि आप अपने मन की खुशी को शज़्दों में ज़्यान न कर पाए हों। ज़्या आप कभी इतने उदास हुए हैं कि आपकी परेशानी बताने के लिए शज़्द न हों? तो फिर आप *alaletos* का मूल अर्थ समझते हैं।

पवित्र आत्मा हमारे लिए ''आहें भर भर कर'' सिफ़ारिश करता है। इस बात पर कोई सर्वसज़्मज़ि नहीं है कि आयत 26 में आहें कौन भर रहा है। वचन पाठ की व्याज़्या करने का सबसे आसान ढंग यह कहना है कि जैसे सृष्टि ''कराहती'' (आयत 22) और हम ''कराहते'' हैं (आयत 23), पवित्र आत्मा हमारे साथ सहानुभूति में ''कराहता'' है। मुझे उन समयों का ध्यान आता है जब मैं अपने प्रिय जनों के खोने की त्रासदी से पीड़ित लोगों के घरों में गया। ऐसे अवसरों के लिए शज़्द काफ़ी नहीं होते। मैं केवल शोकित लोगों के साथ बैठकर उनकी पीड़ा में उनके साथ ''आह भर'' पाया। परन्तु बहुत से लोग यह ज़ोर देते हैं कि आयत 26 का ''आहें भरना'' वैसा ही है और यह हमारी आहें ही हैं। वचन पाठ पवित्र आत्मा के आहें भरने का समर्थन करता है, जिनका संदर्भ इस विचार का समर्थन करता है कि ये आहें मसीही लोगों से मिली थीं।

करिश्माई लोग ''जो ज़्यान से बाहर हैं'' पढ़ते हैं और ''आत्मा की प्रेरणा से दी गई प्रार्थना की भाषा'' पर की बातें करते हैं। वे दावा करते हैं कि आत्मा उनके गलों, जीभों और होठों को प्रार्थना करते समय अपने नियन्त्रण में ले लेता है और उनसे ऐसी अस्पष्ट बातें बुलवाता है जो मनुष्यों को समझ नहीं आतीं। उनका मानना है कि यह कथित ''प्रार्थना की भाषा'' ''अन्यभाषाओं में बात करने'' की एक अभिव्यज़्ति है।[11] ''आहें भर भर कर, जो ज़्यान से बाहर हैं'' वाज़्यांश का अर्थ यह

नहीं है। मैं कई कारणों से इस तथ्य पर ज़ोर देता हूं। उदाहरण के लिए नया नियम सिखाता है कि अब हम आश्चयकर्मों के युग में नहीं रह रहे इसलिए आज लोग "आत्मा की प्रेरणा से दी गई भाषा" में बात नहीं कर सकते हैं। इसके अलावा इन तथ्यों पर विचार करें:

(1) "आहें भर-भरकर जो बयान से बाहर हैं" या तो वे शज़्द हैं जो बोले *गए* या बोलने *नहीं* जा सकते, जबकि कथित प्रार्थना की भाषा बोली जाती *है*। जॉन आर. डज़्ल्यू. स्टॉट ने लिखा है, "ये आहें *glossolalia* नहीं हो सकती,[12] ज़्योंकि वे 'ज़बानें' या 'भाषाएं' शज़्दों में ज़्यान की गई थीं जिनमें कुछ लोग समझ और उनकी व्याज़्या कर सकते थे। यहां पौलुस अस्पष्ट आहों की बात कर रहा है।"[13]

(2) नये नियम के समयों की ("आश्चर्यकर्मों का युग") हर मसीही को भाषाओं में बोलने का आश्चर्यकर्म से दान नहीं मिला था (देखें 1 कुरिन्थियों 12:30); परन्तु रोमियों 8:26 यह बता रहा है कि पवित्र आत्मा परमेश्वर के *हर* बच्चे की सहायता कैसे करता है। इस कारण यह भाषाएं बोलने की बात नहीं हो सकती।

(3) रोमियों 8 में "कराहना" का यह तीसरा उल्लेख है (आयतें 22, 23, 26)। पिछले दोनों हवालों में से किसी में भी "कराहना" का अर्थ "भाषाओं में बोलना" या "प्रार्थना की किसी विशेष भाषा में बात करना" नहीं है। तो इसका अर्थ यहां ज़्या होना चाहिए?

(4) वचन या संदर्भ में ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता कि पौलुस के मन में कोई विशेष "प्रार्थना की भाषा" थी। यह उन लोगों की व्याज़्या है जो वचन को जहां तक हो सके करिश्माई शिक्षा ढूंढ़ने की कोशिश करते हैं।

हम "कराहना" पर चर्चा में फंसकर कहीं पौलुस के संदेश के ज़ोर का अर्थ न भुला दें। प्रेरित ने घोषणा की कि हम नहीं जानते कि प्रार्थना कैसे या ज़्या करनी है। यदि हमें अपने ऊपर ही निर्भर रहना होता तो हम अपने प्रार्थना के जीवनों में आशाहीन होते, परन्तु पवित्र आत्मा हमारी सहायता करता है। वह हमारे मनों को जानता है; वह हमारी आवश्यकताओं को जानता है; वह जानता है कि हम ज़्या कहने की *कोशिश कर रहे* हैं; और वह हमारे निर्बल प्रयासों को लेकर उन्हें परमेश्वर के सिंहासन के सामने ले जाने के योग्य बनाता है। पौलुस ने कहीं और कहा कि परमेश्वर की संतान के रूप में जब हम प्रार्थना कर रहे होते हैं, तो हम "आत्मा में" प्रार्थना कर रहे होते हैं (देखें इफिसियों 6:18; यहूदा 20)।

मुझे पज़्का मालूम नहीं है कि पवित्र आत्मा ज़्या करता है या कैसे करता है। ज़्योंकि मैंने कई बार अनुवादक को साथ लेकर प्रचार किया है इसलिए मुझे आत्मा को मेरा अपना आत्मिक अनुवादक मानना अच्छा लगता है। मैं उन लोगों के सामने बोला हूं जो इटैलियन, जर्मन, जापानी, रोमी या रूसी भाषा बोलते हैं। मैं वे भाषाएं नहीं बोल सकता था और मेरे अंग्रेज़ी के शज़्द मेरे सुनने वालों तक मेरी बात पहुंचाने में काफ़ी नहीं थे। अनुवादक मेरे शज़्दों तथा विचारों को ध्यान से सुनते और फिर उन्हें ज़्यान कर देते, ताकि सुनने वालों को वह बात समझ आ जाए जो मैं कहने की कोशिश कर रहा होता। मैं आत्मा के ऐसे ही काम करने की कल्पना कर सकता हूं। यदि मैं नाशवान मनुष्यों के साथ जो अन्यभाषाएं बोलते हैं संवाद नहीं कर सकता, तो मुझे यह कैसे पता चले कि मैं परमेश्वर के साथ बात कर सकता हूं! मैं धन्यवाद करता हूं कि पवित्र आत्मा दर्दनाक ढंग से मेरे अपर्याप्त प्रयासों को लेता है और उन्हें वैसे ही लेकर स्वर्गीय दरबार में बोली जाने वाली

भाषा में बदल देता है।

अन्यों को प्रार्थना के हमारे प्रयासों को बच्चे के तुतलाने से मिलाना अच्छा लगता है। जब मैं किसी छोटे बच्चे को बोलते सुनता हूं, तो मुझे समझ नहीं आता कि वह मुझ से ज़्या बात करने की कोशिश कर रहा है; परन्तु स्नेही माता उसकी बात को सुनती और समझ लेती है कि "मैं भूखा हूं," "मैं प्रसन्न हूं," "मेरा लंगोट गीला है," "मुझे उठा लो।" कोई भी मानवीय उदाहरण सिद्ध नहीं है परन्तु इस बात पर हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि जब हम प्रार्थना करते हैं तो पवित्र आत्मा हमारी ओर से सिफ़ारिश करता है।

ज़्या हमारी प्रार्थनाएं सचमुच आत्मा के काम के परिणाम स्वरूप परमेश्वर के कानों में पहुंचती है, और ज़्या वह उन पर ध्यान देता है? हां। आयत 27 का आरज़्भ होता है, "और मनों का जांचने वाला जानता है, कि आत्मा की मनसा ज़्या है" (आयत 27)। "मनों का जांचने वाला" तो परमेश्वर है (देखें प्रेरितों 1:24; 1 कुरिन्थियों 4:5; 1 थिस्लुनीकियों 2:4; प्रकाशितवाज़्य 2:23)। परमेश्वर का यह चित्रण रूखा भी है और कोमल भी। रूखा पश्चाज़ापहीन पानी के लिए, परन्तु शांति देने वाला लड़ाई में लगे संत या पवित्र जन के लिए। यदि परमेश्वर हमारे मनों को जानता है, तो निश्चय ही वह आत्मा के मन को भी जानता है; दोनों का संवाद बना रहता है।

आयत 27 आगे कहती है, "ज़्योंकि वह पवित्र लोगों के लिए[14] परमेश्वर की इच्छा के अनुसार[15] बिनती करता है।" "परमेश्वर की इच्छा के अनुसार" वाज़्यांश का अर्थ यह हो सकता है कि परमेश्वर की इच्छा है कि पवित्र आत्मा हमारे लिए विनती करे, ज़्या इसका अर्थ यह हो सकता है कि हमारी ओर से की गई आत्मा की हर विनती परमेश्वर की इच्छा के अनुसार ही होगी। जैसे भी हो, इसका अभिप्राय यह है कि परमेश्वर हमारी ओर से की गई आत्मा की विनती को *सुनता* है और उसका *उज़र देता* है। यूहन्ना ने लिखा:

> और हमें उसके साज़्हने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है। और जब हम जानते हैं, कि जो कुछ मांगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ हमने उससे मांगा, वह पाया है (1 यूहन्ना 5:14, 15)।

उपाय के द्वारा सहायता (8:28)

आयत 28 में पौलुस प्रार्थना के विषय को छोड़ उपाय के विषय में आ गया। आयत 26 में उसने कहा था कि कुछ है जो हम नहीं जानते: "हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करनी चाहिए।" अब उसने कहा कि हम कुछ जानते हैं: "और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्हीं के लिए जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं" (आयत 28)। यह बाइबल के सबसे प्रसिद्ध तथा पसन्द किए जाने वाले प्रश्नों में से एक है। स्टॉट ने लिखा है, "इस पर हर युग और स्थान के विश्वासियों ने अपने मन लगाए हैं। यह उस तकिये की तरह है, जिस पर हम अपने थके हुए सिर आराम के लिए रखते हैं।"[16]

मू. ने कहा है कि रोमियों 8:28 "बाइबल में कहीं भी परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को दी गई सबसे प्रतिज्ञाओं में से एक" है। परन्तु फिर उसने जोड़ा कि "यह सबसे गलत समझी जाने वाली

बातों में से एक भी है।''[17] उदाहरण के लिए यह वचन यह नहीं कहता कि केवल भले लोग परमेश्वर के विश्वासयोग्य संतान जीवन में आएंगे। न ही यह वचन अंधा आशावाद बताता है कि ''सब कुछ बेहतर के लिए होगा'' जहां तक जीवन की बात है, तो यह आयत *ज़्या* कहती है?

परमेश्वर अपने बच्चो के जीवन में काम करता है

पहला, आयत 28 कहती है कि परमेश्वर अपने बच्चों के जीवनों में काम कर रहा है। बहुत से प्राचीन हस्तलेख मूलतया इस प्रकार कहते हैं, ''और हम जानते हैं कि सब बातें मिलकर भलाई के लिए काम करती हैं'' (KJV) आप NASB के वाज़्यांश का इस्तेमाल करें या प्रचलित KJV के शज़्दों का, आप और मैं समझते हैं कि चीज़ें अपने आप काम नहीं कर रहीं बल्कि ईश्वरीय शज़्ति उस में काम कर रही है।

सज़्त के दिन काम करने के लिए अपनी सफ़ाई देते हुए यीशु ने कहा था, ''कि मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूं'' (यूहन्ना 5:17)। सातवें दिन परमेश्वर ने सृष्टि के कार्य से विश्राम किया (उत्पज़ि 2:2), परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर ने काम करना बंद कर दिया। वह संसार को सज़्भाले रहता है और अपने बच्चों की देखभाल करना जारी रखता है। ''मेरा पिता अब तक काम करता है'' में मेरा और आपका जीवन। कई आयतें यह बताती हैं कि परमेश्वर अपनी ओर से ही व्यज़्तिगत तौर पर लगातार काम करता है। उदाहरण के लिए पहाड़ी उपदेश में यीशु ने ज़ोर दिया कि परमेश्वर हमारी आवश्यकताओं को जानता है (मज़ी 6:32) और उन आवश्यकताओं को पूरा करता है (7:11)। एक और प्रतिज्ञा जो मुझे पसन्द है 1 कुरिन्थियों 10:13, जो कहती है कि परमेश्वर हमारी सामर्थ से बाहर परीक्षा में नहीं पड़ने देता बल्कि ''परीक्षा के साथ विकास भी करता है।''

विचार करने के लिए मैं आपको एक और बात बताता हूं। यदि हम रोमियों 8 को इससे पहले तथा बाद की आयतों से अलग कर दें तो इसके कुछ धन से वंचित रहेंगे। पौलुस ज़ोर दे रहा था कि पवित्र आत्मा हमारी निर्बलता में हमारी सहायता करता है (आयतें 26)। ऐसा करने का उसका एक ढंग हमारे प्रार्थना के जीवनों में सहायता करना है (आयतें 26ख, 27)। ऐसा करने का उसका एक और ढंग हमारी जीवन में होने वाली बेकार लगने वाली बातों को अर्थ देकर हमारी सहायता करना है (आयत 28)। कई अनुवादों में आयत 28 तथा इससे पहले की आयतों के सज़्बन्ध पर ज़ोर दिया गया है। उदाहरण के लिए 27 और 28 आयतों में, NEB में कहा गया है कि आत्मा ''परमेश्वर के लोगों के लिए परमेश्वर के ढंग से विनती करता है; और जैसा कि हम जानते हैं, हर बात में वह [आत्मा] उनके साथ जो परमेश्वर से प्रेम रखते हैं भलाई के लिए सहयोग करता है।'' इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम परमेश्वर पिता या परमेश्वर पवित्र आत्मा के हमारी सहायता पर विचार करेंगे। (फिर परमेश्वरत्व का एक सदस्य जो काम करता है, अन्यों के भी वही करने की बात कही गई है।) महत्वपूर्ण बात यह समझना है कि परमेश्वर हमारे जीवनों में काम कर रहा है। ''वह बिना रुके, जोशीले ढंग से और उद्देश्यपूर्वक [हमारी] ओर से सक्रिय है।''[18]

ताकि अच्छा परिणाम मिले ...

दूसरा, रोमियों 8:28 कहता है कि परमेश्वर अपने बच्चों के जीवनों में काम कर रहा है ताकि

उनके साथ जो भी हो चाहे भला और चाहे बुरा, अन्त में वह लाभ के लिए ही हो। कई बार लोग हैरान होते हैं कि "सब बातें" से पौलुस के कहने का ज़्या अर्थ था: "परमेश्वर *सब बातों* को भलाई के लिए मिलकर काम करवाता है। पौलुस ने ज़्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या चंगाई, या जोखिम, या तलवार" की बात करते हुए अगली कुछ आयतों में "सब बातें" की परिभाषा बताई, और फिर कहा, "परन्तु *इन सब बातों* में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, जयवंत से भी बढ़कर हैं" (आयतें 35, 37)। अपने जीवन में होने वाली बातों की अपनी सूची बना सकते हैं। वे चाहे कितनी भी बुरी ज़्यों न हों परमेश्वर उनसे "भलाई ही को उत्पन्न" करा सकता है।

अन्य लोग "भलाई" शज़्द पर चकित होते हैं कि इस आयत में इसका ज़्या अर्थ है? इसका उज़र कई तरह से दिया जा सकता है।[19] परन्तु संदर्भ में हम कह सकते हैं कि "भलाई" वह है जो परमेश्वर की मंशा से मेल रखने वाले लोगों के जीवनों में आती है। आयत 29 को देखें जहां परमेश्वर चाहता है कि हर कोई "उसके पुत्र के स्वरूप में हो।" कोई भी बात जिसमें लोगों को यीशु के स्वरूप में बदलने की क्षमता है वह "भली" है, जबकि कोई भी बात जो इस मंशा को हानि पहुंचाती है वह "बुरी बात" है। फिर आयत 30 के अन्त में देखें: अनन्त परमेश्वर अपने बच्चों को स्वर्ग में महिमा देना चाहता है। कोई भी बात जो लोगों को स्वर्ग में जाने के लिए तैयार करती है "भली" है। कोई भी बात जो इस लक्ष्य को पाने से रोकती है वह "बुरी" है।

पौलुस ने इतने आत्मविश्वास से यह ज़्यों कहा कि "हम *जानते हैं* कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं"? ज़्योंकि उसने अपने जीवन में इस बात को बार-बार पूरा होते देखा था। उदाहरण के लिए उसके "शरीर में एक कांटा" था (2 कुरिन्थियों 12:7), जो ऐसी शारीरिक पीड़ा थी कि उससे उसे बड़ी बेचैनी हुई। पौलुस के लिए लगा कि यह "बुरा" है, सो उसने सच्चे मन से इससे राहत पाने की प्रार्थना की (आयत 8); परन्तु प्रभु ने उसे बताया, "मेरा अनुग्रह तेरे लिए बहुत है; ज़्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है" (आयत 9क)। अन्त में पौलुस की शारीरिक दुर्बलता से "भलाई" ही निकली जब उसने प्रभु पर और भरोसा रखना सीख लिया। उसने लिखा, "इसलिए मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा, कि मसीह की सामर्थ मुझ पर छाया करती रहे" (आयत 9ख)।

पौलुस के जीवन से कई उदाहरण ध्यान में आते हैं। एक अवसर पर उसे उसके एक साथी के साथ पीटकर जेल में डाल दिया गया था (प्रेरितों 16:23, 24)। मैं इसे "बुरा" नाम दूंगा, परन्तु परमेश्वर ने इसमें से "भलाई" उत्पन्न की जिसमें जेलर और उसका परिवार मसीही बन गए (आयतें 30-34)। यरूशलेम में बंदी बनाए जाने के समय से रोम में कैदी बनने, दिन-रात रोमी सिपाहियों की रक्षा में रहने के पौलुस के साथ होने वाले दुर्व्यवहार पर विचार करें। मुझे यह सब "बुरा" लगता है, परन्तु पौलुस के अनुसार, इससे "भलाई" ही निकली। फिलिप्पी के नाम उसने लिखा:

> ... तुझ पर जो बीता है, उस से सुसमाचार ही की बढ़ती हुई है। यहां तक कि कैसरी राज्य की सारी पलटन और शेष सब लोगों में यह प्रगट हो गया है कि मैं मसीह के लिए कैद हूं। और प्रभु में जो भाई हैं, उन में से बहुधा में कैद होने के कारण, हियाव बान्ध कर,

परमेश्वर का वचन निधड़क सुनाने और भी हियाव करते हैं (फिलिप्पियों 1:12-14)।

कई बार पौलुस के लिए कोई भी तुरन्त "भलाई" को देखना कठिन होता होगा। जब ऐसा होता था, तो उसने कहा:

> ... हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नाश होता जाता है। ज़्योंकि हमारा पल भर का हलका सा ज़्लेश हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है। और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, ज़्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं (2 कुरिन्थियों 4:16-18; देखें 2 तीमुथियुस 4:8)।

मैं इब्रानियों 12:11 की शज़्दावली को यहां लगाता हूं: जीवन की सब समस्याएं *अभी के लिए* आनन्द की बात नहीं, बल्कि दुख की बात लगती है; परन्तु उनके लिए जो परमेश्वर में अपना विश्वास बनाए रखते हैं, *बाद में* उन्हें चैन का फल मिलता है। वे हमें वह बनाने में सहायता करते हैं, जो हमें बनना चाहिए।

परन्तु केवल उसके बच्चों के लिए

इस प्रकार रोमियों 8:28 सिखाता है कि परमेश्वर अपने बच्चों के जीवनों में विशेष प्रकार से काम कर रहा है। ताकि उसका परिणाम भलाई हो। परन्तु तीसरी जगह, यह आयत ज़ोर देती है कि वह *केवल* अपने बच्चों के लिए यह कर रहा है। रोमियों के संदर्भ में हमें पौलुस से यह कहने की उज़्मीद होगी कि "परमेश्वर उनके लिए जो यीशु में *विश्वास रखते* हैं सब बातों को मिलाकर भलाई उत्पन्न करता है।" इसके विपरीत उसने अलग शज़्दावली अर्थात विचार उत्पन्न करने वाली शज़्दावलियों का इस्तेमाल किया। रोमियों 8:28 की प्रतिज्ञा "उन सब के लिए" है जो "लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, अर्थात जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।" यह शज़्द परमेश्वर की विश्वासी संतान का अर्थ बताते हैं। मू ने सुझाव दिया कि मसीही लोगों की "मानवीय निर्देश से ('जो लोग [परमेश्वर से] प्रेम रखते हैं' से)" की परिभाषा देती है और फिर "ईश्वरीय निर्देश से ('जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं')।"[20]

पौलुस ने पहले लिखा कि अद्भुत प्रतिज्ञा उनके लिए है "जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं।" रोमियों 8 का अंतिम भाग हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम पर केन्द्रित है। पौलुस ने ज़ोर दिया कि कोई चीज़ "हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग" नहीं कर सकती (आयत 39)। हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम के कारण हमें उससे प्रेम करना चाहिए (1 यूहन्ना 4:19; KJV)। उसके लिए हमारा प्रेम हमें उस पर भरोसा रखने और उसकी इच्छा पूरी करने के लिए प्रेरणा देने वाला होना चाहिए (देखें यूहन्ना 14:15; 1 यूहन्ना 5:3)।

फिर पौलुस ने "बुलाए हुए" शज़्द का इस्तेमाल किया: "जो उसकी इच्छा के अनुसार *बुलाए हुए* हैं।" "बुलाए हुए" शज़्द पर हम विस्तार से बाद में चर्चा करेंगे (आयत 30)। यहां मैं केवल यही कहना चाहता हूं कि लोगों को सुसमाचार के द्वारा बुलाया जाता है (2 थिस्सलुनीकियों 2:14)

और यह कि "बुलाए हुए" शब्द आम तौर पर उन लोगों के लिए इस्तेमाल किया गया है, जिन्होंने सुसमाचार की बुलाहट का *उज़र दिया* है। अन्य शब्दों में यह उन लोगों के लिए कहा गया है, जिन्होंने प्रभु का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया है।

सम्भवतया सबसे आवश्यक वाक्यांश "उसकी इच्छा के अनुसार" है: "उन्हीं के लिए *जो उसकी इच्छा के अनुसार* बुलाए हुए हैं।" परमेश्वर की एक योजना और मंशा है। पौलुस ने इफिसुस के मसीही लोगों को परमेश्वर की "सनातन मनसा जो उस ने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी" के विषय में लिखा (इफिसियों 3:11)। उसने तीमुथियुस को बताया कि परमेश्वर ने "हमारा उद्धार किया ... अपनी मनसा ... के अनुसार" (2 तीमुथियुस 1:9)। "मंशा" या "उद्देश्य" का अनुवाद *prothesis* (*pro* ["पूर्व"] के साथ *thesis* ["जो रखा जाता है"])। *Prothesis* का इस्तेमाल यीशु को भेजने तथा मुनष्यजाति को छुड़ाने के लिए परमेश्वर की सनातन योजना के लिए किया जाता है। यह शब्द न केवल प्रभु की योजना अग्रिम रूप में बनाने की बात करता है, बल्कि यह उस योजना को पूरा करने के उसके दृष्टि निश्चय का संकेत भी देता है। परमेश्वर की योजना या मंशा के लिए अगली दो आयतों का केन्द्रीय विषय है (8:28, 30) क्या हम उसकी मंशा से मेल खाने को तैयार हैं?

अपनी योजना के अनुसार परमेश्वर हम से प्रेम रखता और हमें बुलाता है, परन्तु हमें प्रेम से उस पर भरोसा रखते हुए उसकी बात माननी आवश्यकता है। LB का अनुवाद आयत 28 को इन शब्दों से खत्म करता है: "यदि हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं और उसकी योजना में फिट आ रहे हैं।" यदि हम अपने जीवनों के लिए परमेश्वर के योजना के साथ "मेल खाने" को तैयार हैं, तो हमें यह अद्भुत प्रतिज्ञा मिली है कि वह सब बातों से हमारे जीवनों में भलाई कराएगा!

सारांश

क्या आपको सहायता चाहिए? भजनकार ने लिखा है, "परमेश्वर हमारा शरण स्थान और बल है, संकट में अतिसहज से मिलने वाला सहायक" (भजन संहिता 46:1)। प्रभु ने अपने लोगों से कहा, "मत डर, क्योंकि मैं तेरे संग हूं, इधर उधर मत ताक, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूं; मैं तुझे दृढ़ करूंगा और तेरी सहायता करूंगा, अपने धर्ममय दहिने हाथ से मैं तुझे सम्हाले रहूंगा" (यशायाह 41:10)। क्या निर्बल होने पर आपको सहायता चाहिए? "आत्मा हमारी दुर्बलता में सहायता करता है" (रोमियों 8:26क)। क्या प्रार्थना करते समय आपको सहायता चाहिए? "परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए बिनती करता है" (आयत 26क)।

उन समयों में जब जीवन आपको भारी लगे और आपको प्रभु की सहायता का पता न हो? उन समयों में, आप जान सकते हैं कि पर्दे सब बातों को मिलाकर भलाई उत्पन्न करने के लिए परमेश्वर कार्य कर रहा है (आयत 28क): आप बेहतर व्यक्ति बनाकर स्वर्ग के लिए तैयार करने के लिए यह जानना आपको जीवन का एक अलग दृष्टिकोण दे सकता है। हो सकता है कि इससे जीवन आसान न बने, परन्तु यह इसे सहने के योग्य बना देता है। मुझे भाई थोमस को अपने बच्चों के लिए परमेश्वर की सहायता के बारे में बताना याद है। वह रुकते और पूछते थे, "जब कोई नास्तिक अपनी मृत्युशैया पर होता है तो उसकी देह को कैंसर खा रहा होता है, वह किसके पास जा

सकता है? वह किस पर निर्भर रह सकता है?''[21] यह जानते हुए कि परमेश्वर हम से प्रेम करता है और हमारे जीवनों में कार्य कर रहा है चाहे कैसी भी परिस्थिति ज़्यों न हो, हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण सहायता हो सकती है।

अन्त में मैं आपको याद दिलाता हूं कि प्रभु की सहायता केवल उन्हीं के लिए है ''जो परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, अर्थात उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं'' (आयत 28क)। ज़्या आप परमेश्वर से प्रेम रखते हैं? ज़्या आप उससे इतना प्रेम करते हैं कि आप वही करें जो आपसे करने के लिए कहता है? (देखें 1 यूहन्ना 5:3; इब्रानियों 11:6; प्रेरितों 2:38.) रोमियों के नाम पौलुस के पत्र का अध्ययन करते हुए, परमेश्वर सुसमाचार के शुभ समाचार के द्वारा आपको बुला रहा है (2 थिस्सलुनीकियों 2:14)। ज़्या आपने उसकी बुलाहट को स्वीकार किया है? ज़्या आपने प्रभु के निमन्त्रण के लिए उसे हां कहा है (देखें मज़ी 11:28-30)? ज़्या आप अपने जीवन में परमेश्वर की मंशा से ''मेल खाते'' हैं? यदि आपने प्रभु की बात नहीं मानी है, तो मेरी प्रार्थना है कि आज ही मान लें।

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

यह प्रवचन देने के समय, यह जोड़ लें कि कुछ लोग जो किसी समय परमेश्वर की मंशा में फिट थे अब ऐसे नहीं हैं। उन अविश्वासी मसीही लोगों को प्रभु के पास वापस आने के लिए प्रोत्साहित करें (देखें मलाकी 3:7; प्रेरितों 28:27; प्रकाशितवाज़्य 2:5; 3:19, 20)।

इस प्रस्तुति का एक और सज़्भावित शीर्षक ''जब हम प्रतीक्षा करते हैं'' (रोमियों 8:26-28 को आयत आयत 25 से जोड़ते हुए) हो सकता है। कुछ लेखक रोमियों 8:19-27 का अध्ययन ''तीन कराहनाएं'' शीर्षक के अधीन एक ईकाई के रूप में करते हैं। इस पाठ और ''उसकी मंशा के अनुसार'' को इन दो मुज़्य शीर्षकों ''परमेश्वर का उपलज़्ध उपाय'' (8:26-28) और ''परमेश्वर की पूरी हुई मंशा'' (8:29, 30) के साथ मिलाया जा सकता है।

टिप्पणियां

[1]ओवरलैंड पार्क चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, ओवरलैंड, कैनसस, 16 सितंबर 1990, कैसट में दिया गया प्रवचन क्रिस आर. बुल्र्ड, ''नो कंडेमनेशन, नो सैप्रेशन।'' [2]आपको चाहिए कि उसकी समीक्षा करें जो अध्याय में अभी तक मसीही व्यज़्ति की सहायता के लिए आत्मा के बारे में कहा गया है। [3]पौलुस ने इस कथन में अपने आपको जोड़ा। उसने अपने आपको सुपर संत के रूप में नहीं दिखाया। [4]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पज़्लिशिंग हाउस, 2000), 268. [5]नये नियम में और जगह यह शज़्द केवल लूका 10:40 में मिलता है, जहां मारथा ने मरियम से उसकी *सहायता* करने के लिए कहा था। [6]ए. टी. रॉबर्टसन; लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1988), 326, एन. 110 में उद्धृत। [7]किसी से पूछताछ करने का अर्थ किसी से प्रश्न पूछना है। प्रश्नवाचक सर्वनाम का इस्तेमाल ''कौन?'' या ''ज़्या?'' जैसे प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है। [8]राबर्ट यंग, *एनलेटिकल कन्कोर्डेंस टू द बाइबल,* 22वां अमेरिकन संस्क., संशो. (न्यू यॉर्क: फंक एंड वैंगनल्स कं., 1936), 501. [9]*Huper* का मूल अर्थ ''ऊपर'' है, परन्तु इसका अर्थ ''की ओर से'' हो सकता है। [10]*दि एनलेटिकल ग्रीक लैज़्सिकन* (लंदन: समुएल बैगस्टर एण्ड सन्स, 1971), 14.

[11]नये नियम में, ''बोलियां'' लोगों द्वारा बोली गई भाषाओं को कहा गया है (देखें प्रेरितों 2:4-6), न कि शोर शराबे

भरी आवाज को। [12]*Glossolalia* का अर्थ "बोलियां बोलना है" और इसका इस्तेमाल बोलियां बोलने के आश्चर्यकर्म से मिले दान के लिए किया गया है। [13]जॉन आर. डब्ल्यू स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड 'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोईस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994), 245. [14]तात्पर्य यह है आत्मा केवल पवित्र लोगों, अर्थात मसीही लोगों के लिए सिफ़ारिश करता है। यह प्रतिज्ञा अविश्वासियों के लिए नहीं है। [15]NASB वाली मेरी प्रति में की इच्छा अनुसार के लिए शब्द "द विल ऑफ़" को एटैलिक किया गया है, जिसका अर्थ है कि यह शब्द अनुवादकों द्वारा जोड़े गए थे। मूलतया यूनानी धर्मशास्त्र केवल "परमेश्वर के अनुसार" कहता है। यह समझ आता है कि पौलुस के कहने का अर्थ "परमेश्वर की इच्छा या उद्देश्य के अनुसार" था। [16]स्टॉट, 246. [17]मू, 277. [18]स्टॉट, 247. [19]परमेश्वर द्वारा परिस्थितियों को "भलाई" के लिए काम करवाने पर अतिरिक्त विचारों के लिए, देखें पाठ "परमेश्वर का उपाय (8:28)।" [20]मू, 269.

[21]जे. डी. थॉमस, क्लास नोट्स, *रोमन्स,* अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज (1955)।